Hanuman Chalisa Lyrics in Devanagari PDF

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि ।

वरणौ रघुवर विमलयश जो दायक फलचारि ॥

बुद्धिहीन तनुजानिकै सुमिरौ पवन कुमार ।

बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार् ॥

ध्यानम्

गोष्पदीकृत वाराशिं मशकीकृत राक्षसम् ।

रामायण महामाला रत्नं वन्दे अनिलात्मजम् ॥

यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।

भाष्पवारि परिपूर्ण लोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।

जय कपीश तिहु लोक उजागर ॥ 1 ॥

रामदूत अतुलित बलधामा ।

अञ्जनि पुत्र पवनसुत नामा ॥ 2 ॥

महावीर विक्रम बजरङ्गी ।

कुमति निवार सुमति के सङ्गी ॥3 ॥

कञ्चन वरण विराज सुवेशा ।

कानन कुण्डल कुञ्चित केशा ॥ 4 ॥

हाथवज्र औ ध्वजा विराजै ।

कान्धे मूञ्ज जनेवू साजै ॥ 5॥

शङ्कर सुवन केसरी नन्दन ।

तेज प्रताप महाजग वन्दन ॥ 6 ॥

विद्यावान गुणी अति चातुर ।

राम काज करिवे को आतुर ॥ 7 ॥

प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया ।

रामलखन सीता मन बसिया ॥ 8॥

सूक्ष्म रूपधरि सियहि दिखावा ।

विकट रूपधरि लङ्क जरावा ॥ 9 ॥

भीम रूपधरि असुर संहारे ।

रामचन्द्र के काज संवारे ॥ 10 ॥

लाय सञ्जीवन लखन जियाये।

श्री रघुवीर हरषि उरलाये ॥ 11 ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडायी।

तुम मम प्रिय भरतहि सम भायी ॥ 12 ॥

सहस वदन तुम्हरो यशगावै।

अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावै ॥ 13 ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।

नारद शारद सहित अहीशा ॥ 14 ॥

यम कुबेर दिगपाल जहां ते।

कवि कोविद कहि सके कहां ते ॥ 15 ॥

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा।

राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥ 16 ॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।

लङ्केश्वर भये सब जग जाना ॥ 17 ॥

युग सहस्र योजन पर भानू।

लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ 18 ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही ।

जलधि लाङ्घि गये अचरज नाही ॥ 19 ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ 20 ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।

होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ 21 ॥

सब सुख लहै तुम्हारी शरणा ।

तुम रक्षक काहू को डर ना ॥ 22 ॥

आपन तेज तुम्हारो आपै ।

तीनों लोक हाङ्क ते काम्पै ॥ 23 ॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै ।

महवीर जब नाम सुनावै ॥ 24 ॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।

जपत निरन्तर हनुमत वीरा ॥ 25 ॥

सङ्कट सें हनुमान छुडावै ।

मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥ 26 ॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।

तिनके काज सकल तुम साजा ॥ 27 ॥

और मनोरध जो कोयि लावै ।

तासु अमित जीवन फल पावै ॥ 28 ॥

चारो युग परिताप तुम्हारा ।

है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ 29 ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे ।

असुर निकन्दन राम दुलारे ॥ 30 ॥

अष्ठसिद्धि नव निधि के दाता ।

अस वर दीन्ह जानकी माता ॥ 31 ॥

राम रसायन तुम्हारे पासा ।

साद रहो रघुपति के दासा ॥ 32 ॥

तुम्हरे भजन रामको पावै ।

जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥ 33 ॥

अन्त काल रघुवर पुरजायी ।

जहां जन्म हरिभक्त कहायी ॥ 34 ॥

और देवता चित्त न धरयी ।

हनुमत सेयि सर्व सुख करयी ॥ 35 ॥

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा ।

जो सुमिरै हनुमत बल वीरा ॥ 36 ॥

जै जै जै हनुमान गोसायी ।

कृपा करो गुरुदेव की नायी ॥ 37 ॥

जो शत वार पाठ कर कोयी ।

छूटहि बन्दि महा सुख होयी ॥ 38 ॥

जो यह पडै हनुमान चालीसा ।

होय सिद्धि साखी गौरीशा ॥ 39 ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।

कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ 40 ॥

दोहा

पवन तनय सङ्कट हरण — मङ्गल मूरति रूप् ।

राम लखन सीता सहित — हृदय बसहु सुरभूप् ॥

सियावर रामचन्द्रकी जय । पवनसुत हनुमानकी जय । बोलो भायी सब सन्तनकी जय ।